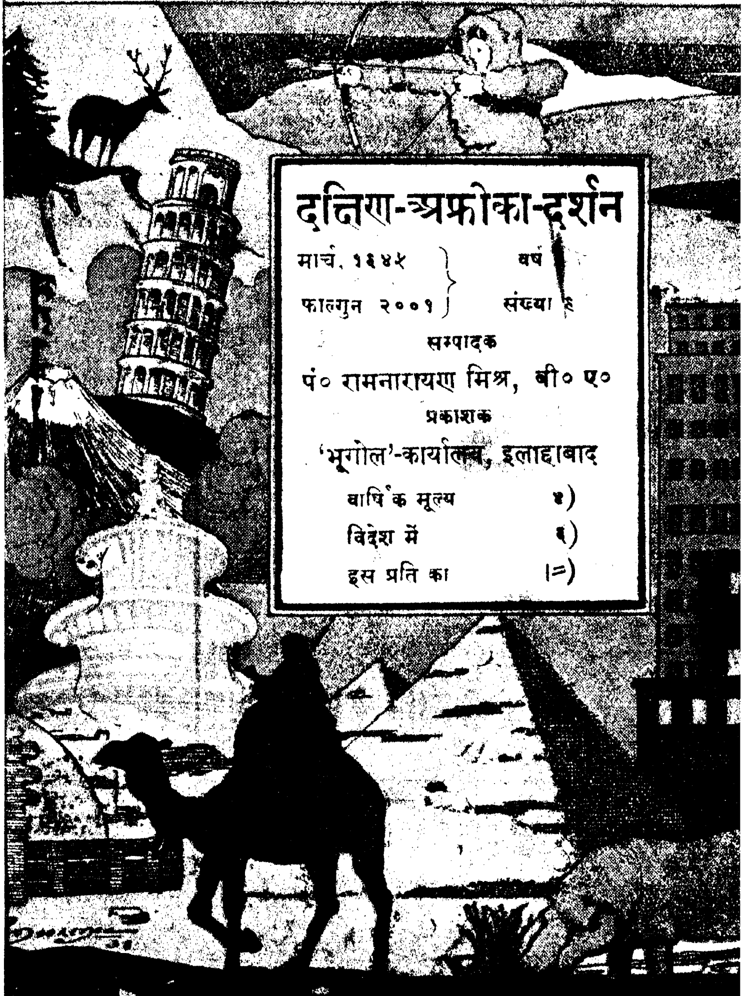
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—६५



दक्षिण-अफ्रीका-दर्शन

मार्च, १९४५ } वर्ष
फाल्गुन २००१ } संख्या ६

सम्पादक
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ
१—स्थित सीमा, तथा विस्तार	...	...	१
२—जलवायु	...	...	५
३—वनस्पति और पशु	...	...	७
४—कृषि		...	९
५—डच खेत		...	१३
६—काफिर		...	१५
७—मूल निवासियों		...	१६
८—संक्षिप्त इतिहास	...	...	२०
९—शासन-प्रबन्ध	...	...	२५
१०—नगर	...	...	२९
११—डर्बन	...	...	४०
१२—स्वाज़ीलैंड	...	...	५०

स्थान

स्थित सीमा, तथा विस्तार

दक्षिण-अफ्रीका में महात्मा गाँधी ने असहाय भारतीयों के राजनैतिक कष्टों को दूर करने के लिये सत्याग्रह का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया था। इस समय भी यहाँ अँग्रेज़ों की अपेक्षा भारतीयों की संख्या कहीं अधिक है। इन दो कारणों से दक्षिण-अफ्रीका हम लोगों के लिये विशेष महत्व रखता है।

भौगोलिक दृष्टि से दक्षिणी-अफ्रीका में अफ्रीका महाद्वीप का वह सब भाग शामिल है जो जैम्बेज़ी नदी के दक्षिण में स्थित है। इस प्रकार इसमें दक्षिण-अफ्रीका के अतिरिक्त दक्षिणी रोडेसिया, दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका, बेचुआना लैंड प्रोटेक्टोरेट (रक्षित राज्य) बसूटालैंड, स्वाज़ीलैंड, पुर्चगाली पूर्वी अफ्रीका का दक्षिणी आधा भाग भी शामिल है। इन सब प्रदेशों का क्षेत्रफल १३ लाख वर्ग मील है।

दक्षिणी-अफ्रीका का क्षेत्र फल ४,७१,६१७ वर्ग मील है। इसका बड़ा भाग समतल पठार है। इसके कुछ भाग समुद्र-तल से ४००० फुट से भी अधिक ऊँचे

हैं। तटीय प्रदेश बहुत ही तंग है। इस तटीय पेटी की ऊँचाई १००० फुट से कम है। इसके आगे भीतर की ओर भूमि एक दम ऊँची हो गई है। पठार के किनारे तक पहुँचने के लिये कई प्राकृतिक सीढ़ियाँ हैं। भीतर की ओर से देखने पर पठार के सिरे पर कुछ ऊँची पहाड़ियां सी दिखाई देती हैं। पर तट की ओर से देखने पर वे ऊँची पर्वत श्रेणियाँ ज्ञात होती हैं और भीतरी भाग को निचले तटीय प्रदेश से प्रथक करती है। ट्रान्सवाल और नैटाल के बीच में यह पर्वत ड्रेकन्सबर्ग के नाम से प्रसिद्ध है। केप प्रान्त के उत्तरी-पूर्वी भाग में स्टार्मबर्ग है। अधिक पश्चिम की ओर स्नपबर्ग, न्यूवेल्ड, कोम्सबर्ग, रोमवेल्ड, और केमीसबर्ग पर्वत है। दक्षिण-अफ्रीका की सब से अधिक उँचाई पठार के बाहरी सिरे पर है। डर्बन के पश्चिम में डेकन्सबर्ग की सब से अधिक ऊँची चोटी है। यह पठारी ऊँचा सिरा तट की ओर बहने वाली असंख्य छोटी छोटी धाराओं और आरेंज तथा बाल नदियों के बीच में जल-विभाजक बनाता है। लिम्पोपो और उसकी दक्षिणी सहायक ओलीफान्टा इस पूर्वी पठारी सिरे को गहरा काट कर

पूर्व की ओर बहती है। यहाँ कुछ दूर तक विटवाटर्स रैंड हिन्द महासागर और अटलांटिक महासागर की ओर जल विभाजक बनाता है।

भीतरी पठार में अधिकांश ट्रान्सवाल समस्त आरेंज फ्री स्टेट केप प्रान्त का ऊपरी कारू नामाक्वा पठार कन्हारो और बुशमैनलैंड सम्मिलित हैं। पठार के सिरे और समुद्र तट के बीच में उत्तरी ट्रान्सवाल के निचले भाग, पुर्चगाली पूर्वी अफ्रीका और केप प्रान्त के दक्षिणी-पूर्वी जिले स्थित हैं। आशान्तरोप और आरेंज नदी के मुहाने के बीच में भी केप प्रान्त के कुछ नीचे ज़िले स्थित हैं। ऊँचे भीतरी पठार एक लहरदार मैदान के समान जान पड़ता है। इसके ऊपर नियत दूरी पर चपटी चोटी वाली मेज़ के समान पहाड़ियाँ उठी हुई हैं। पठार में बहने वाली नदियों ने अपने दक्षिण पठार की नदियों की तरह खड्ड के समान गहरी घाटियाँ बना ली है। इनमें बहुत कम पानी रहता है। वे नाव चलने योग्य नहीं है। पूर्व की ओर वर्षा अधिक होने से हिन्द महासागर में गिरने वाली नदियों में सदा पानी रहता है। पश्चिमी भाग अधिक खुश्क है। इस लिये आरेंज़ नदी को छोड़ कर शेष नदियों में वर्ष भर पानी नहीं

रहता है। आरेंज नदी ड्रेकन्स बर्ग की सब से ऊँची चोटी से निकलती है। इसमें बसूटो लैंड पर्वत की असंख्य छोटी छोटी नदियाँ आ मिलती हैं। अन्त में दक्षिणी ट्रान्सवाल का पानी बहा लाने वाली बाल नदी इसमें मिलती है। पर यह सब नदियाँ बहुत ही कम पानी लाती हैं। खुश्क प्रदेश में बहने के कारण आरेंज नदी के निचले मार्ग में बहुत कम पानी रहता है। इस ओर यह बहुत छोटी नदी दिखाई देती है। इसका मुहाना कछारी मिट्टी की एक दीवार से घिर गया है। केप प्रान्त के पश्चिम में यहाँ की नदियाँ अपने भीतरी भाग में कढ़ाई के आकार के गहरे आखात बनाती हैं। वर्षा ऋतु में यह पानी से घिर जाते हैं। खुश्क ऋतु में यहाँ नमक की चमकीली तली शेष रह जाती है। किसी किसी आखात का क्षेत्र फल १०० वर्ग मील है।

अफ्रीका के शेष भागों की तरह दक्षिणी अफ्रीका का तट भी बहुत कम कटा फटा है। इसी से यहाँ बन्दर अधिक नहीं हैं।

जलवायु

दक्षिणी अफ्रीका २० और ३५ अंश दक्षिणी अक्षांशों के बीच में फैला हुआ है। कई अक्षांशों के बीच में स्थित होने के कारण यहाँ कई प्रकार की जलवायु है। अधिकांश प्रदेश शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित हैं। कुछ भाग उष्ण कटिबन्ध में स्थित है और अधिक उष्ण हैं। दक्षिणी अफ्रीका के पश्चिमी तट पर बेंग्वेला की ठंडी धारा दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। यह इस तट को कुछ ठंडा रखती है। यहाँ वर्षा तो अधिक नहीं होती है। लेकिन कुहरा बहुत घिरा रहता है। पूर्वी तट पर मुज़म्बीक की गरम धारा उत्तर से दक्षिण की ओर चलती है। इस ओर का तट अधिक गरम रहता है। हिन्द महासागर की ओर से आने वाली हवायें वर्षा भी अधिक कर देती हैं। इस देश के भिन्न भिन्न भागों में वर्षा भिन्न है। केप उपनिवेश के पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में वर्षा बहुत कम होती है। नैटाल, ट्रान्सवाल और आरेंज़ फ्रीस्टेट में वर्षा कहीं अधिक होती हैं। केप टाउन में २५ इंच, किम्बरली में १६ इंच, हेरी स्मिथ में २६ इंच, पोर्ट एलिज़बेथ में २२ इंच, डर्बन में ४५ इंच, जहानेसबर्ग में ३१ इंच, सेलिसबरी में ३२ इंच और

बुलवायो में २४ इंच वर्षा होती है। केप टाउन के समीप वाले दक्षिणी-पश्चिमी ज़िलों में शीतकाल में वर्षा होती है। तूफानी वर्षा कम होती है। साधारणतया धीरे धीरे वर्षा अधिक होती है। इस ओर ग्रीष्म ऋतु प्रायः सूखी रहती है। पर छाया में तापक्रम ८० अंश फारेनहाइट से अधिक नहीं होता है। अक्टूबर से फर्वरी तक जल-वायु सर्वोत्तम रहती है। यहाँ जुलाई सरदी का और जनवरी गरमी का महीना है। भीतर की ओर ऊँचे पठार पर वर्षा ऋतु में तूफानी वर्षा अधिक होती है। कभी कभी आधे घंटे में ४ इंच वर्षा हो जाती है। अक्टूबर और जनवरी के बीच में ओले भी गिर जाते हैं। ओले प्रायः अंडे के बराबर होते हैं। इनसे फसल को बड़ी हानि होती है। प्रबल वर्षा से बाँध टूट जाते हैं। उपजाऊ मिट्टी बह जाती है पर पानी भूमि के भीतर नहीं भिद पाता है। दक्षिणी-अफ्रीका का ताप-क्रम प्रायः सम शीतोष्ण रहता है। ग्रीष्म ऋतु में दिन बहुत गरम हो जाता है पर रात्रि शीतल रहती है। शीतकाल में रात्रि इतनी ठंडी हो जाती है कि कभी कभी पानी जम कर बरफ बन जाता है। तटीय भागों में

दिन और रात्र के तापक्रम में थोड़ा अन्तर रहता है। पर पठार पर यह अन्तर बास या तीस अंश फारेन हाइट हो जाता है। दक्षिण-अफ्रीका में भारतवर्ष की तरह वर्ष के बड़े भाग में आकाश निर्मल रहता है और दिन में धूप रहतो है। वर्षा वर्ष के कुछ ही दिनों में होतो है। इससे यहां की जलवायु पर्याप्त वर्षा होने पर भो खुश्क रहतो है।

वनस्पति और पशु

जलवायु के अनुसार दक्षिण-अफ्रीका में कई प्रकार की वनस्पति है। उत्तर-पश्चिम की ओर मरु भूमि है। यहाँ वनस्पति का प्रायः अभाव है। उत्तर-पश्चिम में लिम्पोपो नदी के दक्षिण में सब से कम वनस्पति है। तट के पास नाविक मरुस्थल में वनस्पति का और अधिक अभाव है। केवल कहीं कहीं नमकीन झाड़ियां हैं। भीतर की ओर कुछ वनस्पति दिखाई देने लगती है। कुछ नागफनी और कुछ गुच्छेदार घास होती है। जिन नदियों में कभो कभी वर्षा होने पर

पानी बहने लगता है उनकी सूखी तली में अधिक झाड़ियाँ उग आती हैं। केप उपनिवेशक के पश्चिमी भाग में शीतकाल में पर्याप्त वर्षा हो जाती है। यहाँ तरह तरह की घास और फूल वाले पौधे उगा करते हैं। पहाड़ी ढालों पर पेड़ उग आते हैं। कुछ पेड़ बाहर से लाकर यहाँ लगाये गये हैं। कारू पर्वत के उत्तर-पूर्व में केवल ग्रीष्म ऋतु में कुछ वर्षा होती है। यहाँ कारू बुश नाम की एक झाड़ी उगती है। इस प्रदेश में भेड़ बकरियों के चरने योग्य घास हो जाती है। इसी से यहाँ अंगोरा बकरी और भेड़ पालने का काम बहुत होता है। पूर्व की ओर अधिक वर्षा होने से अच्छी घास के अतिरिक्त फलों के बगीचे और खेत हैं। वेल्ड के कई भागों में बन लगाने का प्रयत्न हो रहा है। अधिक पूर्वी भाग में सघन वनस्पति है।

सौ वर्ष पहले दक्षिणी-अफ्रीका में हिरण, ज़ेब्रा, हाथी, जङ्गली भैंसा, जीराफ, दरियाई घोड़ा और गैंडा के झुण्ड घूमा करते थे। गोरों के आने पर जङ्गली पशु बड़ी निर्दयता से मार डाले गये। जेम्बेज़ी के दक्षिण में केप प्रान्त के कन्यास्ता और आडो ज़िलों के जङ्गलों

में कुछ जङ्गली हाथी मिल जाते हैं। वैसे जेम्बेज़ी के दक्षिण में हाथी नष्ट हो चुके हैं। तेंदुआ के प्रान्त ट्रान्सवाल और नैटाल के दुर्गम स्थानों में ही मिलता है। उत्तरी-पूर्वी ट्रान्सवाल और बेचुआना लैंड में कुछ सिंह पाये जाते हैं। हिरणों की यहाँ कई जातियाँ हैं। गीदड़ बनबिलाव और जङ्गली कुत्ते दूर दूर तक फैले हुये हैं। पहाड़ी भागों में बेबून बन्दर मिलते हैं। यहाँ पक्षी कई प्रकार के मिलते हैं। नदियों में मगर घड़ियाल और मछलियाँ मिलती हैं। साँपों की कई जातियाँ हैं। दीमक और टिड्डी दल यहाँ बड़ी हानि पहुंचाते हैं।

कृषि

बहुमूल्य खनिजों की अधिकता होने पर भी दक्षिण अफ्रीका का प्रधान पेशा खेती है। खानों की आय का बड़ा भाग खेती को बढ़ाने के लिये व्यय किया गया है। कृषि की उन्नति के लिये सरकार से बड़ी सहायता मिलती है। यहां वर्षा कम होती है। इस कमी को पूरा करने के लिये यहाँ सैकड़ों सिंचाई के बाँध बनाये गये

हैं। खेत प्रायः बहुत बड़े हैं। बहुत खेत गोरे लोगों के हाथ में है। विद्यार्थियों को सभी प्रकार की शिक्षा देने के लिये यहाँ की सरकार ने कई स्कूल खोले हैं। प्रत्येक विद्यार्थी पर खाने पीने ठहरने आदि का वार्षिक व्यय ६० पौंड होता है। एल्सेन बर्ग (दक्षिणी-पश्चिमी केप प्रान्त) ग्रूट फान्टेन ग्लेन (आरेंज फ्रीस्टेट) पोटचेफस्ट्रूम (ट्रान्सवाल) और सेडार (नेटाल) में कृषि स्कूल हैं। स्टेलेनबास्च और पोटचेफस्ट्रूम के विश्व विद्यालयों में कृषि एक विषय है इसे लेकर विद्यार्थी बी० यस्सी आदि की उपाधियाँ प्राप्त कर सकते हैं। इनके अतिरिक्त दो वर्ष की पढ़ाई समाप्त करके विद्यार्थी भेंड़ और ऊन, गोपालन, अंगूर, मकई, ढोर और सूकर-पालन के विषय में विशेष योग्यता प्राप्त कर के डिप्लोमा (उपाधि) प्राप्त कर सकते हैं।

अधिकतया दक्षिण-अफ्रीका गाय पालने के लिये बहुत ही उपयुक्त है। बेचुआनालैंड, उत्तरी ट्रान्सवाल और दक्षिणी रोडेशिया में ढोरों के चरने के लिये विशाल चरागाह हैं। यहाँ गाय बैलों के झुण्ड स्वच्छन्द विचरा करते हैं। ट्रान्सवाल, नैटाल, पूर्वी फ्रीस्टेट और

दक्षिण-अफ्रीका-दर्शन

केप प्रान्त के घास के प्रदेशों में दूध के लिये गाय पालते हैं। यहाँ दूध और पनीर के असंख्य कारखाने हैं। यहाँ सरकारी समितियों के ढंग से ग्वाले दूध से पनीर आदि बनाते हैं। बड़े बड़े बैल गाड़ियाँ खींचते हैं। रेलवे लाइनों और मोटर लारियों की अधिकता होने पर भी दक्षिण अफ्रीका में सब कहीं बैल गाड़ियों की भरमार है। अधिक भारी बोझा १६ या २० बैल एक साथ जुत कर खींचते हैं। इस समय दक्षिण अफ्रीका में १ करोड़ से अधिक गाय बैल हैं। प्रति वर्ष यहां से प्रायः ३ करोड़ रुपये का मक्खन और पनीर बाहर भेजा जाता है। इनके अतिरिक्त यहाँ से प्रायः ५० लाख रुपये का मांस और ४ करोड़ रुपये का चमड़ा बाहर भेजा जाता है।

भेड़ पालने का कार्य दक्षिण अफ्रीका में बहुत पहले आरम्भ हुआ। दक्षिण अफ्रीका का कारू-प्रदेश भेड़ पालने के लिये अधिक उपयुक्त है। समस्त दक्षिणी अफ्रीका की दो तिहाई भेड़ें पश्चिमी और मध्यवर्ती केप प्रान्त और ट्रान्सवाल में पाली जाती हैं। भेड़ों की वृद्धि अनुकूल ऋतु पर निर्भर है। अकाल पड़ने पर

लाखों भेड़ें नष्ट हो जाती हैं। दक्षिण अफ्रीका में भेड़ें ऊन के लिये पाली जाती हैं। कुछ मांस के लिये काटी भी जाती हैं। ऊन देने वाली भेड़ों की संख्या बढ़ते बढ़ते ४ करोड़ हो गई है। भेड़ों के घेरे ऐसे प्रबल बनाये गये हैं कि रात को गीदड़ इनके भीतर नहीं आ सकता है। लगभग २० करोड़ रूपये की ऊन प्रति वर्ष यहाँ से बाहर भेजी जाती है।

घोड़े—दक्षिण-अफ्रीका के विशाल चरागाह घोड़ों के पालने के लिये उपयुक्त है। यहां का घोड़ा अरबी और अँग्रेज़ी नसल का दोगला है। यह बड़ा मज़बूत होता है। यह चढ़ने के काम आता है और सवारी भी खींचता है। पर अब यहाँ मोटरों और मोटर साइकिलों की संख्या बढ़ रही है। दक्षिण-अफ्रीका में प्रति चौदहवें योरूपीय के पास मोटरकार है। फिर भी यहाँ ६ लाख घोड़े और डेढ़ लाख खच्चर हैं। खच्चर बोझा ढोने के काम आते हैं।

जहाँ चरागाह अधिक अच्छे नहीं होते हैं वहाँ गधे पाले जाते हैं। इनको रखने में बहुत कम खर्च होता है। यह

बोझा ढोने के काम आते हैं। दक्षिण-अफ्रीका में लगभग ८ लाख गधे हैं।

सुअर—यहाँ मांस के लिये सुअर पाले जाते हैं। यहाँ लगभग १० लाख सुअर हैं। यहाँ मुर्गियाँ भी बहुत पाली जाती हैं। लगभग ६० लाख रुपये के अंडे बाहर भेजे जाते हैं।

दक्षिण-अफ्रीका का वेल्ड प्रदेश अफ्रीका के दूसरे अर्द्ध मरुस्थलों की तरह जङ्गली शुतुर्मुर्गों का जन्मस्थान है। पालतू शुतुर्मुर्गों के पंख अधिक अच्छे होते हैं अतः यहाँ शुतुर्मुर्ग पाले जाने लगे। इस समय यहाँ लगभग ८ लाख पालतू शुतुर्मुर्ग हैं। जहां कहीं लूसर्न या दूसरी घास मिलने लगी वहीं शुतुर्मुर्ग के बाड़े बन गये।

डच खेत

डच लोगों के खेत दक्षिणी-अफ्रीका में समान नहीं है। इनके खेत बहुत बड़े होते हैं। ६००० एकड़ का खेत भी छोटा गिना जाता है। खेत के पास ही किसान का घर बना होता है। धनी लोगों के घर बहुत अच्छे होते

हैं। भूमि की कमी न होने से यहां बहुत कम दो मंजिला घर दिखाई देंगे। यहां बसे हुये डच (हालैंड वासी) लोग बोअर कहलाते हैं। बोअर लोगों का जीवन बड़ा सादा होता है। इनके घर चित्रों से सजे नहीं रहते हैं। न इधर उधर पढ़ने के लिये पुस्तकें रक्खी हुई मिलेंगी। प्रत्येक घर में बाइबिल या इंजील अवश्य रहती है।

बोअर घरों में बास या बूढ़े बाप की आज्ञा सब बातों में मानी जाती है। लड़के बड़े आज्ञाकारी होते हैं। स्त्री अपने पति को सदा सहायता देती है। और उसकी आज्ञा मानती है।

बोअर लोग दिन भर में करीब (५) बार कहवा पीते हैं। उनके कहवा की अंगीठी प्रायः गरम हो रहती है। जब उनके यहां कोई बाहरी पुरुष आता है तो वे उससे तरह तरह के प्रश्न पूछते हैं। फिर वे उसे कहवा पिलाते हैं। बोअर लोगों के भोजन में भेड़ या बकरी का मांस, रोटी और तरह तरह के मुरब्बे रहते हैं। भोजन के समाप्त होने पर एक बर्तन में पानी लाया जाता है। सब लोग बारी बारी से उसी बर्तन में हाथ धोते हैं।

अन्त में परिवार की प्रार्थना होती है। बोअर घर दूर दूर फैले हुए हैं फिर भी वर्ष में एक दो बार वे किसी गिरजे में एकत्रित होकर प्रार्थना करते हैं।

काफिर

दक्षिण-अफ्रीका में मूल निवासी हब्शी काफिरों की संख्या गोरों से दसगुनी है। लेकिन वहां का शासन गोरों के हाथ में है। काफिर लोगों का जीवन बड़ा सादा होता है। इनके गोल झोपड़े घास और मिट्टी के बने होते हैं। इन्हें काल कहते हैं। झोपड़े एक दूसरे के पास-पास होते हैं। गांव प्रायः गोल-गोल या चन्द्राकार होता है। गांव के बीच में अथवा एक ओर पशुओं के रहने के लिये कांटों का गोल घेरा होता है। इन छोटे गोल घरों में भीतर घुसने के लिये छोटा दरवाजा होता है। घर में खिड़कियां या झरोखे नहीं होते हैं। धुआं निकलने में बड़ी कठिनाई होती है।

घर के भीतर मिट्टी के कुछ बर्तन होते हैं। अनाज रखने के लिये एक दो टोकरियां होती हैं। सोने के लिये

घास या पत्तों की चटाइयां होती हैं। यह लोग लकड़ी के तख्तों की तकिया लगाते हैं। घर के बीच में एक छोटा गोल गड्ढा होता है। यह बरसी की तरह कच्ची मिट्टी से घिरा रहता है। यहां भोजन बनाने के लिये दिन रात लकड़ी जला करती है। भोजन बनाने के लिये हांडी पड़ोस की दुकान से मोल ले ली जाती है। ठीक-ठीक धुआं न निकलने से क्राल में विशेष प्रकार की गन्ध रहती है। यह काफिर लोगों को बड़ी प्रिय होती है। इसी से वे अपनी जन्मभूमी को छोड़ना पसन्द नहीं करते हैं।

इन लोगों का रंग काला होता है। जो लोग तेल लगाते हैं उनका रंग कुछ सुधर जाता है। गरम देश में बहुत कम कपड़ों की आवश्यकता पड़ती है। काफिर लोग प्रायः नंगे रहते हैं।

मूल-निवासी

जब पुर्चगाली और डच लोग पहली बार केप तट पर उतरे तो उन्होंने तटीय जिलों में हाटेनटाट लोगों

की बस्तियां देखीं। अधिक भीतर की ओर बुशमैन रहते थे। यह लोग घर नहीं बनाते थे। यह लोग बड़े असहाय थे। उत्तर की ओर से बाण्टू लोगों ने और दक्षिण की ओर से योरुपीय लोगों ने इन्हें भगाया अतः बुशमैन लोगों ने निर्जन स्थानों में आकर शरण ली। इस समय यह लोग पश्चिम की ओर कल्हारी रेगिस्तान में रहते हैं। जिन पथरीली गुफाओं में यह रहते हैं उनमें इन्होंने तरह तरह के प्राकृतिक दृश्य और आखेट के चित्र खींचे हैं।

योरुपीय लोगों के बढ़ने से हाटेनटाट लोगों को भी तट छोड़ कर भीतर की ओर भागना पड़ा। इस समय यह लोग आरेंज नदी के निचले भाग में छोटी छोटी टोलियों में उत्तर और दक्षिण की ओर रहते हैं। दक्षिण-अफ्रीका में बाण्टू लोग सब से अधिक संख्या में रहते हैं। इनमें कई जातियों के हब्शी लोग शामिल हैं। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में तट की ओर से भीतर की ओर बढ़ने वाले योरूपीय लोगों से इनका संघर्ष हुआ। नये ढंग के शस्त्रों से सुसज्जित और संगठित योरूपीय लोग विजयी हुये। पराजित बांटू

लोगों में एक बड़ा अच्छा परिवर्तन हो गया पहले वे शिकारियों का जीवन बिताते थे। अब वे खेती और चरवाही में लग गये और घर बना कर बस गये। इनके रहने के स्थान नियत कर दिये गये हैं। स्वाज़ीलैण्ड और बसूटोलैण्ड में योरुपीय लोगों की छत्र छाया में वे कुछ स्वाधीन जीवन बिताते हैं। उनके आपस के युद्ध बन्द कर दिये गये। आपस में शान्ति रहने से इनकी संख्या तेज़ी से बढ़ी। निचली घाटियों में खेती और ऊँचे चरागाहों में जानवरों के पालने का कार्य होने लगा। इनकी संख्या बढ़ने से योरुपीय लोगों को चिन्ता होने लगी। मिशनरी लोग इनमें इसाई धर्म फैलाने और इनमें शिक्षा फैलाने का काम करते हैं। कुछ लोग कला-कौशल भी सीखते हैं। सीख जाने पर इन्हें अपनी योग्यता के अनुसार स्थान नहीं मिलता है।

मूल-निवासियों को पृथक रखने में गोरे लोग बड़ी सावधानी दिखलाते हैं। जहाँ मूल निवासी और गोरे एक ही नगर में रहते हैं वहां गोरे लोगों के मुहल्ले अलग होते हैं। रात्रि के समय हब्शी लोग गोरों के मुहल्लों में नहीं जा सकते। काले लोगों के स्कूल और

गिरजे अलग होते हैं। खानों में काम करने वाले काले मज़दूरों के बाड़े अलग होते हैं। वे गोरों के बंगलों से दूर होते हैं। बड़े खेतों में भी काले मज़दूरों के झोपड़े गोरों के घरों से अलग होते हैं। जहां काले वर्णसंकर लोग हैं (जो पुराने समय में गोरों और मूल-निवासियों के मिश्रण से बने हैं) उनके साथ भो गोरे लोग उसी तरह का व्यवहार करते हैं जो काले मूल-निवासियों के साथ करते हैं। काले लोग उन व्यवसायों को नहीं कर सकते जिनमें गोरे लोग लगे हैं। अधगोरों को फिर भी कुछ सुविधायें हैं। यह लोग, मिस्त्री, शाफर आदि के काम पर लगाये जाते हैं और इन्हें योरुपीय लोगों से कुछ ही कम मज़दूरी मिलती है। इस प्रकार यह लोग मूल-निवासी हब्शी और शुद्ध योरुपीय के बीच में मध्यम वर्ग के माने जाते हैं मूल-निवासियों को बहुत ही कम मज़दूरी मिलतो है। पर मूल-निवासियों में भी जाग्रति बढ़ रही है। वे श्रम संघ और राजनैतिक संस्थायें बनाने लगे हैं और अपनी दशा सुधारने के लिये तरह तरह की मांगें रखने लगे हैं।

संक्षिप्त इतिहास

दक्षिण-अफ्रीका के प्राचीन इतिहास का कुछ भी पता नहीं चलता है। कहीं कहीं ऐसे चिन्ह अवश्य मिलते हैं जिनसे सिद्ध होता है कि यहाँ पहले सोने की खुदाई हुई थी।

योरुप से सबसे पहले यहाँ आने वाले पुर्चगाली लोग थे। १४८७ ई० में इनके जहाज़ी कप्तान ने दक्षिण-अफ्रीका के तट का चक्कर लगाया और आशान्तरीप का पता लगाया। पहले उन्होंने इसका नाम तूफानी अन्तरीप रक्खा था। १४९७ ई० में वास्को-डिगामा इधर आया। २५ दिसम्बर को वह नैटाल के तट पर पहुँचा १६०० ई० में डेन, इंगलिश, डच और फ्रांसीसी लोग इधर आने लगे। जो लोग इधर होकर जाते थे वे मीठा ताजा पानी लेने के लिये आशान्तरीप (केप आफ गुडहोप) में कुछ समय के लिये ठहर जाया करते थे। जब डच लोगों को भारतवर्ष के व्यापार से अधिक लाभ होने लगा तो उन्होंने १६५१ ई० में यहां उपनिवेश बसाने का विचार किया। १६५८ ई० में वानरिबेक टेबिल बे (खाड़ी) में उतरा। लगभग १०० उसके साथी थे। उसने केप टाउन की नींव डाली। पहले

यह विचार था कि यहां एक ऐसा केन्द्र बने जहां आने जाने वाले जहाजों को ताजा मांस, शाक भाजी और मीठा पानी मिल सके। कुछ वर्षों में कुछ लोग योरुप से आकर भीतर की ओर बस गये। स्टेलनबोश प्रथम उपनिवेशक बना यहाँ से शराब और गेहूँ बाहर जाने लगा। कुछ फ्रांसीसी हेंगनाट फ्रांस से निकाल दिये गये थे। कुछ जर्मन भी अपने देश से बाहर कर दिये गये थे। यह सब लोग दक्षिण-अफ्रीका में आकर बस गये। १६७२ में यहां गोरों की संख्या ६०० थी। १७०० में इनकी संख्या बढ़ कर १२०० हो गई। १८०७ में यह संख्या २७,००० हो गई। यह लोग तट से भीतर की ओर बढ़ रहे थे। अतः उत्तर की ओर से बढ़ने वाले बांटू लोगों से उनकी लड़ाइयाँ होने लगीं। योरुपीय लोगों ने काफिर लोगों को पूर्व की ओर भगा कर स्वयं आगे बढ़ते ही रहे। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में यहां योरुप युद्धों का प्रभाव पड़ा। १७९६ ई० में अँग्रेज़ों ने केप प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। १८०३ ई० में यह हालैंड को दे दिया गया। १८०६ में अँग्रेज़ों ने फिर यहां अपना अधिकार कर लिया।

१८२० ई० में ३५०० अँग्रेज़ अल्गोआ बे (खाड़ी) में उतरे। इन्होंने पोर्ट एलिज़बेथ की नींव डाली कुछ लोग भीतर की ओर बढ़े जो डच लोग इनसे कहीं अधिक पहले से बसे हुये थे उनसे और इन नये आये हुये अँग्रेज़ों से लड़ाई झगड़े होने लगे। डच लोगों ने अँग्रेज़ों की पराधीनता स्वीकार न की। वे अपनी पुरानी जागीरों को अलग कर अँग्रेज़ी सीमा से बाहर चले गये। १८३६ ई० १०,००० बोअर लोग अपने पशु और सामान को लेकर केप प्रान्त के बाहर चले गये। इन्होंने आरेंज नदी को पार किया और आरेंज फ्री स्टेट की नींव डाली। कुछ लोग और आगे बढ़े और वाल नदी को पार कर गये। इन्होंने ट्रान्सवाल का उपनिवेश बसाया। कुछ लोग ड्रेकन्सबर्ग पर्वत को पार करके नैटाल में पहुँचे। यहां इन्हें अधिक सफलता न मिली। १८५४ ई० में बोअर लोग लिम्पोपो नदी तक पहुँच गये। १८६७ ई० में किम्बर्ली में हीरे की खानों का पता लगा। इससे केप प्रान्त और नैटाल के ब्रिटिश उपनिवेशों में भी बड़ी उन्नति हुई। बोअर प्रजातन्त्र अधिक समय तक सुख से न रह सके। १८७८ ई० में

ब्रिटिश सरकार ने बोअर प्रजातन्त्र को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। लेकिन तीन वर्ष बाद बोअर लोगों ने विद्रोह का झंडा उठाया। १८८१ ई० में माजूबा में ब्रिटिश सेना की हार हुई। तब ब्रिटिश सरकार ने बोअर प्रजातन्त्र को स्वाधीन कर दिया। कुछ वर्षों में बोअर लोगों ने बेचुआनालैंड में भी प्रजातन्त्र स्थापित किया। पर १८८४ ई० में यहां ब्रिटिश सरकार का भारी दबाव पड़ा। इससे १८८५ में यह ब्रिटिश रक्षित राज्य मान लिया गया। १८८८ ई० में मशोनालैंड और माटाबेललैंड में ब्रिटिश प्रभुत्व घोषित किया गया। १८८९ में रोडेशिया में ब्रिटिश साउथ अफ्रीका कम्पिनी स्थापित हुई। इस प्रकार बोअर प्रजातन्त्र तीन ओर से ब्रिटिश राज्य से घिर गया। केवल पूर्व की ओर पुर्चगाली राज्य था।

१८८६ ई० में विटवाटर्स रैंड की प्रसिद्ध सोने की खानों का पता लगा। ट्रान्सवाल में अँग्रेज़ों की भीड़ आने लगी। कुछ ही समय में सुनसान स्थान में जहांनेसबर्ग का स्वर्ण नगर उठ खड़ा हुआ।

नये आये हुये अँग्रेज़ों और पुराने बसे हुये बोअर

लोगों में यहां झगड़ा होने लगा। रोडेशिया के डाक्टर जेम्सन ने ५३० अँग्रेज़ों को लेकर बोअर प्रजातन्त्र को नष्ट करने के लिये अचानक छापा मारा। पर कुछ ही दिनों में क्रूगसंडार्प में उसे आत्म समर्पण करना पड़ा। १८६६ ई० में पूरी तयारी करने के बाद ब्रिटिश सरकार ने अपने देश वासियों का पक्ष लिया और बोअर युद्ध छेड़ दिया। आरम्भ में बोअर लोगों को कुछ सफलता मिली। पर शीघ्र ही उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य की सेनाओं का सामना करना पड़ा। निर्बल बोअर प्रजातन्त्र सुसज्जित ब्रिटिश सेनाओं के सामने अधिक समय तक टिक नहीं सकीं। तीन वर्ष के युद्ध के पश्चात् १,२२,००० बोअर स्त्रियां और बच्चे और लड़ने में अयोग्य पुरुष कैद कर लिये गये। बोअर प्रजातन्त्र ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिये गये। फिर भी २०,००० सशस्त्र बोअर इधर उधर फैले हुये थे और छापा मार युद्ध करते थे। चार वर्ष के बाद बोअर लोगों को स्वायत्त-शासन का अधिकार मिल गया। १६१० ई० में यह केप प्रान्त और नैटाल के स्वराज्य प्राप्त ब्रिटिश उपनिवेशों में मिला दिये गये। इनके मिलने से दक्षिण

अफ्रीका संघ या यूनियन आफ साउथ अफ्रीका बना। बोअर नेता जनरल बोथा दक्षिण-अफ्रीका का प्रधान मन्त्री बना। १६१६ ई० में उसकी मृत्यु हो गई। १६१४ के प्रथम योरुपीय महासमर में दक्षिण-अफ्रीका ने ब्रिटिश साम्राज्य का साथ दिया। एक दो स्थानों में जो विद्रोह हुआ वह दबा दिया गया। फिर १६१५ में जनरल बोथा ने दक्षिणी-पश्चिमी जर्मन अफ्रीका पर चढ़ाई की। वहां के २००० जर्मन सुसज्जित २०,००० सिपाहियों के सामने अधिक समय तक न ठहर सके।

बोथा के बाद जनरल स्मट्स प्रधान मन्त्री हुये। १६२४ के चुनाव में उनकी हार हुई और जनरल हरज़ोग प्रधान मन्त्री बने।

शासन-प्रबन्ध

दक्षिण-अफ्रीका के संघ में ट्रान्सवाल, आरेंज, फ्रीस्टेट, नैटाल और केप उपनिवेश के चार प्रान्त शामिल हैं। प्रथम प्रान्त में बोअर लोगों की प्रधानता है। नैटाल और केप उपनिवेश में गोरों में अँग्रेज़ अधिक संख्या में हैं। निवासियों में बांटू आदि अफ्रीका के

मूल-निवासियों की संख्या कहीं अधिक है। भारतीय और एशियावासी पर्याप्त संख्या में हैं। गोरे लोगों की संख्या बहुत कम है। पर शासन की बागडोर इन्हीं गोरों के हाथ में है।

दक्षिण-अफ्रीका में दो राजधानियां हैं। प्रीटोरिया शासक वर्ग की राजधानी है। केपटाउन में पार्ल्यामेंट की बैठक होती है। गवर्नर जनरल इंगलैंड के राजा का प्रतिनिधि माना जाता है। इस हैसियत से वह शासन प्रबन्ध में सर्व प्रधान है। पर वह अपने मन्त्रियों की अनुमति बिना कोई कार्य नहीं करता है। यहां ११ मंत्री होते हैं। गवर्नर जनरल को अधिकार है कि वह पार्ल्यामेंट का उद्घाटन और विसर्जन करे। यहां की पार्ल्यामेंट में दो सभायें (सीनेट और हाउस आफ एसेम्बली) होती है। सीनेट में ४० सदस्य होते हैं। आठ आठ सदस्य प्रत्येक प्रान्तीय सभा से चुन कर आते हैं। शेष ८ सदस्यों को गवर्नर जनरल नियुक्त करता है। इनमें चार सदस्य मूल-निवासियों की जानकारी में विशेषज्ञ होते हैं। बहुसंख्या में सदस्य १० वर्ष के लिये चुने जाते हैं। बहुसंख्या में बसे हुये

हब्शियों को मत देने या सदस्य चुनने का अधिकार नहीं है।

हाउस आफ एसेम्बली के सदस्यों का सीधा या प्रत्यक्ष चुनाव होता है। इसके सदस्यों की संख्या लगभग १५० होती है। सदस्य ५ वर्ष के लिये चुने जाते हैं। प्रान्तीय काउन्सिल ३ वर्ष के लिये चुनी जाती है। शिक्षा, कृषि, प्रत्यक्ष कर (टैक्स) सड़क, पुल, अस्पताल आदि का निर्माण और निरीक्षण प्रान्तीय सरकार के हाथ में रहता है। प्रान्तीय सरकार के सब से बड़े कर्मचारी को गवर्नर जनरल नियुक्त करता है। ३०० पौंड (लगभग ४५०० रुपये के ऊपर की आय पर अविवाहित लोगों पर और ६००० रुपये से ऊपर की आय पर विवाहित लोगों पर पांच प्रतिशत आय कर लगता है)। ३७५०० रुपये से ऊपर आय पर ८ पौंड में २ शिलिंग या १० प्रतिशत आय कर लगता है। सोना और हीरा खोदने वाली कम्पिनियों पर १५ प्रतिशत कर लगता है। शेष कम्पिनियों पर साढ़े बारह प्रतिशत कर लगता है। प्रायः ४ लाख रुपये से अधिक आय वालों पर २५ प्रतिशत अतिरिक्त कर लगता है।

शिक्षा

दक्षिण-अफ्रीका में ७ और १६ वर्ष की अवस्था वाले गोरे बालकों के लिये शिक्षा अनिवार्य है। उच्च शिक्षा और कृषि शिक्षा यूनियन सरकार के हाथ में है। साधारण शिक्षा प्रान्तीय सरकार के हाथ में है। शिक्षा पर ११ करोड़ रुपये से अधिक वार्षिक व्यय होता है। प्रत्येक विद्यार्थी की शिक्षा पर प्रतिवर्ष प्रायः ६०० रुपये व्यय किये जाते हैं। जो गोरे लोग खेती करते हैं। उनके बालकों के लिये खेत में स्कूल बने हैं। जहां कहीं १० बालक भी एकत्रित हो सकते हैं वहां उनके लिये एक स्कूल है। जहां कहीं दूर के खेतों से विद्यार्थी आते हैं वहां उनके ठहरने और भोजन आदि के प्रबन्ध के लिये होस्टल बने हैं। पर प्रायः विद्यार्थी दिन में पढ़ने आते हैं और सन्ध्या के समय घर चले जाते हैं। उनको पढ़ाने के लिये एक अध्यापक या अध्यापिका होती है। मूल-निवासियों की अपेक्षा गोरों की संख्या इस देश में प्रायः १० प्रतिशत है। पर यहां गोरे बालकों के लिये ४०३० स्कूल हैं। हब्शी और हिन्दुस्तानी आदि सांवले

बालकों के लिये ३७३० स्कूल हैं। गोरे बालकों के ऊपर साढ़े तीन लाख पौंड और हब्शी बालकों के ऊपर सवा तीन लाख पौंड खर्च होता है।

उच्च शिक्षा पाने का गौरव गोरे बालकों को ही प्राप्त है। उच्च शिक्षा के लिये यहां ४ विश्व-विद्यालय हैं। केपटाउन स्टेलेनबास्च, विटवाटर्सरैंड (जहांनेसबर्ग) साउथ अफ्रीका की यूनिवर्सीटी में ६ कालेज हैं। यह कालेज ब्लोयमफान्टेन, वेलिंगटन, ग्रेहम्स्टाउन, प्रीटोरिया, पीटर मारिट्ज़ बर्ग और पोटचेफस्ट्रूम में हैं। विश्वविद्यालयों में ६५०० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। ८०० अध्यापक हैं। इन पर साढ़े तीन लाख पौंड व्यय होता है।

नगर

केपटाउन दक्षिणी अफ्रीका में सबसे पुराना नगर है। जनसंख्या में जहांनेसबर्ग इससे कुछ बड़ा है। इसकी जनसंख्या ढाई लाख है। इसमें सवा लाख गोरे हैं। शेष हब्शी, हिन्दुस्तानी और दूसरी जातियों के लोग हैं केपटाउन की स्थिति बड़ी मनोहर है। यह

टेबिल बे (खाड़ी) के सिर पर बसा है। इसके सामने समुद्र का नीला जल और ३३०० फुट ऊँचा टेबिल पर्वत है। शहर के बड़े बड़े बँगले और बगीचे इसी के ढालों पर बसे हुये हैं। लाइन्स हेड (सिंह शिखर) से एक पहाड़ी उत्तर की ओर चली गई है। यह पछुआ तूफानी हवाओं को रोकने में सहायता देती है। दक्षिण-पूर्व की ओर एक गहरा खड्ड टेबिल पर्वत को डैविल (शैतान) चोटी से पृथक करता है। डैविल पीक (शैतान चोटी) के पीछे मोवे, न्यूलैंड्स, क्लेरमांट आदि शहर के बाहरी भाग हैं। यहां होकर फाल्स बे (खाड़ी) को मार्ग गया है। तंग पहाड़ी प्राय द्वीप के आगे चपटी भूमि प्रधान स्थल से मिलाती है। इसका आकार कुछ जिब्राल्टर की पहाड़ी के समान मालूम होता है और प्रायद्वीप द्वीप सा दिखाई देता है। इसके पश्चिम की ओर अटलांटिक महासागर की लहरें टकराती हैं। दक्षिणी सिरे पर आशान्तरीप है। इसका दृश्य बड़ा सुन्दर है। जलवायु मनोहर है। दक्षिण अफ्रीका के धनी लोग यहां सैर करने आया करते हैं। यहां प्रबल वर्षा होने पर भी प्रति मास प्रायः २०० घन्टे धूप रहती है। बसन्त ऋतु के समान

गरमी रहती है। यात्रियों के लिये अटलांटिक महासागर और फाल्स बे की ओर तैरने योग्य अनुकूल जल है। पीछे की ओर मोटर पर सैर करने के लिये सुन्दर सड़कें हैं। पहाड़ियों पर चढ़ने में भो बड़ा सुहावना दृश्य मिलता है। प्राचीन समय में योरुप से भारतवर्ष को जाने वाले जहाजों के मार्ग केपटाउन की मध्यवर्ती स्थिति बड़ी उपयोगी थी। यहां ठहर कर वे अपने जहाजों की साधारण मरम्मत कर सकते थे और ताजा पानी, दूध, फल, शाक, आदि ले सकते थे। अतः केपटाउन धीरे-धीरे बढ़ने लगा।

टेबिल बे को प्रकृति ने सुरक्षित बन्दरगाह नहीं बनाया था। पहले कई बार जहाज़ तली से टकरा गये। १८६० ई० में यहां डाक (जहाजी घाट) का बनाना आरम्भ हुआ। विशाल ब्रेकवाटर (जलतोड़ दीवार) १८६८ में पूरी हुई। १८७० ई० में नये बन्दरगाह का उद्घाटन हुआ। जहाजों को शरण देने के लिये वर्तमान दीवार को ५००० फुट से अधिक लम्बा किया जा रहा है। बन्दरगाह एक दम अद्यतन (अपटुडेट) है। यहां ३०,००० टन अन्न रखने के लिये विशाल एलीवेटर बन

हैं। ठंडे कमरों में ४००० टन ताज़े फल रखे जाते हैं। इनके भीतर इतना कम तापक्रम रहता है कि फलों के बिगड़ने का कोई डर नहीं रहता है।

केपटाउन की प्रधान सड़क एडरली स्ट्रीट है। यहीं शहर के कारबार और व्यापार का केन्द्र है यह सड़क टेबिल बे (बन्दरगाह) से सीधी सड़क के भीतर जाती है। थोड़ी थोड़ी दूर पर फूलों से सजे हुये उपहारगृह (रेस्टारेंट) है। केपटाउन के प्रधान भवन इसी सड़क के दोनों ओर हैं। जहाज़ से उतरने पर इसी सड़क पर बाईं ओर यात्रियों को सूचना देने वाला इन्फार्मेशन बूटो है। इसके आगे रेलवे स्टेशन है। इसके पीछे बड़ा डाकघर है कुछ ही दूर स्टैंडर्ड बैंक है। इस सड़क पर बड़ी भीड़ रहती है लेकिन गवर्नमेंट एवीन्यू में बड़ी शान्ति रहती है। इसी सड़क पर महारानी विक्टोरिया की विशाल मूर्ति और पार्ल्यामेंट भवन है। यहाँ के बोटेनीकल गार्डन में संसार के सभी भागों के ८००० से ऊपर भिन्न भिन्न पेड़ हैं। इस बगीचे के उत्तरी सिरे पर विशाल पुस्तकालय है। इसके दक्षिणी सिरे पर अजायब घर है। अजायब घर के एक भाग में दक्षिणी-अफ्रीका का विचित्र संग्रहालय है। परेड के पूर्व में क़िला है।

टेबिल माउंटेन (पर्वत) पर चढ़ने के लिये बिजली के ज़ोर से चलने वाली ट्रैम गाड़ी चलती है। यह मोटे फौलादी रस्सों से सधी रहती है।

किम्बर्ली—केपटाउन से ६४७ मील की दूरी पर हीरे की खान वाला किम्बर्ली नगर समुद्र-तल से ४०१२ फुट की ऊँचाई पर बसा है। यह नगर एक विशाल पहाड़ी मैदान के बीच में स्थित है। इस नगर की सड़कें पुराने ढंग की हैं। यहां के हाईकोर्ट का बुर्ज बहुत ऊँचा है। यहां के पुस्तकालय में ५१००० से अधिक पुस्तकें हैं। यहाँ के अजायब घर में बुशमैन (मूल निवासियों) के हाथ की बनी हुई कई चीज़ें रक्खी हैं। एक सड़क पर सेसिल रोड्स की १३ फुट ऊँची मूर्ति खड़ी है।

किम्बर्ली नगर की स्थापना १८६६ ई० में हुई। एक छोटा लड़का आरेंज नदी के दक्षिणी किनारे पर होपटाउन के पास खेल रहा था। इसी समय उसे एक चमकीला पत्थर मिला। लड़के ने यह पत्थर अपनी मां को दिया। मां ने इसे एक बोअर किसान को दिया। किसान ने इसे एक सौदागर के हाथ बेच दिया सौदागर इसे केपटाउन ले आया, जाँच करने पर पता लगा कि

एक हीरा है। केप प्रान्त के गवर्नर ने इसे ५०० पौंड में मोल ले लिया। २ वर्ष के बाद यहां एक हीरा फिर मिला जो ११२०० पौंड में बिका। इसका फल यह हुआ कि वाल नदी के किनारे होपटाउन के दूर जिले में हीरा खोदने वालों की भीड़ आने लगे। कछारी भूमि में हीरों का पता लगा। १८७० ई० में किम्बर्ली की अद्भुत खदानों का पता लगा। जिन खेतों में खदानों का पता लगा उनका मूल्य एक दम बढ़ गया। जिस जिले में खदाने मिलीं उसको ब्रिटिश सरकार ने १८७७ ई० में अपना जिला घोषित किया। आरेंज फ्रीस्टेट ने इसका विरोध किया। १८७६ ई० में ६०,००० पौंड देकर ब्रिटिश सरकार ने फ्रीस्टेट को शान्त कर दिया और ग्रीक्वालैंड जिला जहां हीरा मिलता था ब्रिटिश अधिकार में ले लिया गया। पहले अलग-अलग व्यक्ति हीरा निकालने का काम करते थे फिर नीली भूमि से हीरा निकालने के लिये भारी मशीनों की आवश्यकता पड़ी। अतः हीरा निकालने का काम ब्रिटिश कम्पनी द्वारा होने लगा। १८६६ में बोअर युद्ध आरम्भ हुआ। बोअर लोगों ने किम्बर्ली को घेर तो लिया पर वे इस

नगर पर अपना अधिकार न कर सके। १६१४ की लड़ाई में हीरों की मांग बहुत कम हो गई। इससे इस कारबार को बड़ा धक्का लगा। किम्बर्ली की खान सब से पुरानी और धनी है। पहले धरातल पर खुदाई होती थी आजकल किसी-किसी स्थान पर ३,००० फुट गहरी खुदाई करने पर हीरा मिलने वाली नीली भूमि मिलती है।

जहानेसबर्ग केपटाउन से ६५६ मील की दूरी पर समुद्र तल से ५७३५ फुट ऊँचा बसा है। यह दक्षिण-अफ्रीका का सबसे नया और सबसे बड़ा नगर है। इसमें पौने दो लाख गोरे और डेढ़ लाख काले लोग रहते हैं। यह दक्षिण-अफ्रीका का प्रधान कारबारी नगर है। दक्षिण-अफ्रीका में जो कुछ रेल आदि की आर्थिक उन्नति हुई है उसका श्रेय जहानेसबर्ग और इसकी सबसे बड़ी सोने की खान विटवाटर्स रैंड को है। यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यकर है। ग्रीष्म में २८ इंच तक वर्षा हो जाती है। यहां गरमी की ऋतु अक्टूबर से मार्च तक रहती है। संसार में जितना सोना निकलता है उसका आधे से अधिक जहानेसबर्ग की खानों से

निकाला जाता है। आरम्भ में खान में काम करने वाले लोग डेरों और टीन के छोटे कमरों में रहते थे। इस समय यहां आलीशान नगर बसा हुआ है। यहां का टाउन हाल, कचहरी, पुस्तकालय, चिड़िया घर, विश्वविद्यालय देखने योग्य है।

प्रीटोरिया—केपटाउन से १००१ मील की दूरी पर समुद्र-तल से ४४७१ फुट ऊँचा बसा है। स्टेशन दक्षिणी भाग में है। शहर के भीतर ट्रैम गाड़ी चलती है। पर्वतों से घिरे हुये प्रीटोरिया नगर का दृश्य बड़ा सुन्दर है। नकेल ट्रान्सवाल प्रान्त की राजधानी है, वरन् दक्षिण-अफ्रीका के शासन का केन्द्र-स्थान है। इसकी जन-संख्या प्रायः ६०,००० है। १८५५ ई० में आपीज़ नदी के किनारे पर प्रीटोरिया एक छोटा गांव था। १८६३ ई० में प्रीटोरिया ट्रान्सवाल की राजधानी बनी। उस समय यहां केवल ८० घर थे। सरकारी दफ़्तर छप्पर से छाया हुआ था। पड़ोस में सोने की खदानों का पता लगने से प्रीटोरिया की जनसंख्या तेज़ी से बढ़ी। १८६१ में यहां की जन-संख्या ६००० हो गई। यहाँ आलीशान सरकारी इमारतें, स्कूल और कालेज

बन गये। यहां की चौड़ी सड़कों के दोनों ओर छायादार पेड़ लगे हैं। यहां कई सुहावने पार्क हैं। उत्तर की ओर चिड़िया घर है। पूर्व की ओर ट्रान्सवाल यूनिवर्सिटी के भव्य भवन हैं। इसी ओर कृषि कालेज है। दो मील की दूरी पर कीटाणु—अनुसन्धान शाला है।

विक्टोरिया प्रपात—केपटाउन के १६४० मील की दूरी पर जेम्बेज़ी नदी में समुद्र-तल से २६६४ फुट की उँचाई पर पड़ते हैं। लिविंग्स्टन नगर नदी से ४ मील और स्टेशन से १ मील दूर है। विक्टोरिया प्रपात देखने के लिये मई से अक्तूबर का समय उत्तम रहता है। अक्टूबर के बाद यहां बड़ी गरमी पड़ने लगती है। वर्षा के समाप्त होने पर अप्रैल और मई मास में प्रपात की उँचाई सब से अधिक हो जाती है, तभी ज़ेम्बेज़ी की सहायक नदियों और ऊपरी मार्ग का अधिक जल प्रपात में पहुँचता है। खुश्क ऋतु में प्रपात में बहुत थोड़ा पानी पहुँचता है और उनकी शोभा घट जाती है। विक्टोरिया प्रपात का पता १८५५ ई० में डेविड लिविंगस्टन ने लगाया था। विक्टोरिया प्रपात की विशेषता यह है कि प्रपात के ऊपर और नीचे की ओर समीपवर्ती भूमि

प्रायः समान उँचाई की है। ज़ेम्बेज़ी नदी अचानक ३३० फुट चौड़े और १४८० फुट गहरे खड्ड में गिरती है। यह खड्ड नदी के मार्ग के साथ समकोण बनाता है। इससे निकल कर नदी एक भूल भुलैया सी बनाती है। ४० मील आगे नदी चौड़ी हो जाती है। इसके किनारे नीचे हो जाते हैं। प्रपात की दवारें प्रायः सीधी सपाट खड़ी हैं। केवल कहीं-कहीं कुछ चट्टानें इधर उधर निकली हुई हैं। दूरी से प्रपात का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। प्रायः ५०० फुट की दूर पर प्रपात का जल खड्ड में गिरता है। यहां बिजली के गरजने के समान कोलाहल होता है और बड़े वेग से पानी का फेन ऊपर उठता है। इससे १००० फुट ऊँचा सफेद बादल सा बन जाता है। ऊपर उठने के बाद पानी के सूक्ष्म कण वर्षा बिन्दुओं की भाँति फिर लगातार नीचे गिरते रहते हैं। कभी-कभी इस वर्षा और बादल की मुटाई इतनी अधिक हो जाती है कि प्रपात ठीक-ठीक दिखाई नहीं देता है। कभी-कभी तेज़ हवा इन कणों को उड़ा कर अलग कर देती है और प्रपात का सुन्दर दृश्य स्पष्ट दिखाई देने लगता है। एक निकली हुई चट्टान (डेंगर

पाइंट) से दृश्य अत्यन्त सुन्दर दिखाई देता है। यहां से इन्द्रधनुष-प्रपात सीधा दिखाई देता है। जो १५०० फुट से अधिक चौड़ा है। केटेरेक्ट (प्रपात) द्वीप से भी सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। प्रपात से कुछ ही नीचे जेम्बेज़ो नदी पर रेल का पुल बना है। यहां से भी प्रतात का दृश्य दिखाई देता है। यह पुल ४०० फुट ऊँचा और ४५० फुट चौड़ा है। इसमें केवल एक महराब है। पुल के उत्तरी सिरे से खजूर, ताड़ और और दूसरे वृक्षों के सघन बन में होता हुआ एक छोटा मार्ग नीचे कन्दरा तक गया है। यहीं उछलते हुये पानी का भँवर है। समस्त प्रपात की चौड़ाई १ मील है। इसके बीच बीच में कई द्वीप हैं। लिविंग्स्टन और प्रपात द्वीप अधिक बड़े हैं। इन तक मनुष्य नाव द्वारा पहुँच सकता है। ६० फुट चौड़ा शैतान (डैविल प्रपात) दक्षिणी किनारे के पास है। इसके आगे प्रपात द्वीप है। जहाँ से प्रधान प्रपात आरम्भ होता है। प्रधान प्रपात के बीच में एक विशाल चट्टान है जिससे यह दो भागों में बंट गया है। एक भाग की चौड़ाई १७० फुट है और दूसरे भाग की चौड़ाई ६७० फुट है। इसके आगे लिविंग्स्टन द्वीप है।

लिविंग्स्टन द्वीप और उत्तरी किनारे के बीच में इन्द्रधनुष द्वीप है जो १८५० फुट चौड़ा है। यह प्रपात विक्टोरिया फाल्स स्टेशन के पास ही स्थित है। पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका के बेरा बन्दरगाह से विक्टोरया प्रपात रेलवे स्टेशन लगभग ६०० मील दूर है और दूसरे दर्जे का ८०) रु० रेल भाड़ा लगता है। केपटाउन अधिक दूर है यहां से दूसरे दर्जे का रेल का किराया १३५) रु० है।

डर्बन

जन-संख्या की दृष्टि से दक्षिण-अफ्रीका में डर्बन नगर का तीसरा स्थान है। इसकी जन-संख्या १८२,००० है। इसमें ३६ फीसदी योरुपीय ३१ फीसदी हिन्दुस्तानी २८ फीसदी मूल-निवासी और २ फीसदी अन्य लोग हैं।

डर्बन नगर विशाल डर्बन खाड़ी के उत्तरी सिरे पर स्थित है। दक्षिण-अफ्रीका में यह सर्वोत्तम प्राकृतिक बन्दरगाह है। इसका पृष्ठ प्रदेश भी बड़ा उपजाऊ और धनी है। इसी से दक्षिण-अफ्रीका के व्यापार में इसका

स्थान सर्व प्रथम है। नैटाल में बाहर भेजने के लिये ऊन, मक्का और शक्कर होती है। न्यूकासेल और यूट्रेच जिलों के कोयले की खदानें भी इसके पास ही है। इससे जहाजों के लिये यहां कोयला भरा पड़ा रहता है। दक्षिण-अफ्रीका के बन्दरगाहों में डर्बन बन्दरगाह जहानेसबर्ग (जो सोने की खानों का केन्द्र है) के लिये सब से पास पड़ता है। यहां का सोना और दूसरा सामान डर्बन से बाहर जाता है। समस्त ट्रान्सवाल का एक मात्र अच्छा बन्दरगाह डर्बन ही है। नैटाल के तट का पता १४६७ ई० में वास्कोडिगामा ने लगाया था। पर कई सदी तक यहां कोई उपनिवेश न बन सका। १८२३ ई० में एक जूलू सरदार से अँग्रेज़ों ने तट को चौड़ा भाग ले लिया। उस समय केप प्रान्त का गवर्नर बेंजमि ड अर्बन थे उन्हीं के सम्मानार्थ इस नये बन्दरगाह का नाम डर्बन पड़ गया। डर्बन नगर के प्रथम वर्ष बड़ी चिन्ता में बीते। पहले जूलू लोगों के आक्रमण हुये। एक बार यहां के नये बसे हुये अँग्रेज़ों ने भाग कर एक जहाज़ में अपनी जान बचाई। कुछ समय में डच लोग ड्रेकन्सबर्ग पर्वत को पार करके तट के पास आ गये। यहां उन्होंने

नैटालिया नाम का प्रजातन्त्र स्थापित किया। १८४३ ई० में नैटाल को अँग्रेज़ों ने ब्रिटिश प्रदेश घोषित किया। १८५४ तक यहां १२०४ अँग्रेज़ आकर बस गये। उन्होंने यहां म्यूनिसिपेलिटी स्थापित की। तब से इस नगर की वृद्धि लगातार होती रही। डर्बन शहर एक चपटे प्रायद्वीप पर स्थित है। इसका सिरा पाइंट कहलाता है जो महासागर और डर्बन खाड़ी के बीच में स्थित है। सामने का स्थान ब्लफ कहलाता है। इसी ब्लफ और पाइंट के बीच में बन्दरगाह का द्वार है। आगे जहाज़ी घाट हैं। डर्बन का व्यापारिक केन्द्र उस भाग में है जहां तीन (स्मिथ स्ट्रीट, वेस्ट स्ट्रीट, फाइन स्ट्रीट) समानान्तर सड़कें जाती हैं। शहर के उत्तर में जनरल स्टेशन है। इसके दक्षिण में विक्टोरिया, एस्पलेने और इम्बैंक मेंट हैं। पूर्व की ओर ओशन बीच और मेरीन पेरेड है। डर्बन का टाउन हाल दक्षिण-अफ्रीका भर में सर्वोत्तम है। इसका गुम्बद २६७ फुट ऊँचा है। यह टाउन हाल १६०६ ई० में ५६ लाख रुपये की लागत से बना। इसमें ३५०० मनुष्य बैठ सकते हैं। इसके एक पक्ष में पुस्तकालय है। इसी से मिला हुआ

अजायबघर और चित्र संग्रह है। टाउन हाल के सामने वेस्ट स्ट्रीट में जनरल पोस्टआफिस है। इसके पड़ोस में बैंक और सेन्ट्रल स्टेशन है। पोस्टआफिस के पास से ही नगर के सब भागों के लिये ट्रैम गाड़ियाँ आरम्भ होती हैं। थोड़ी थोड़ी दूर के लिये जूलू रिक्शा चलाने वाले मिलते हैं। ब्लफ के ऊपर से नगर और बन्दरगाह का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। नीचे तेल की बड़ी बड़ी टङ्कियाँ हैं जिनमें से प्रत्येक में ४० लाख गैलन पेट्रौल समाता है यहीं २½ करोड़ गैलन मिट्टी का तेल रक्खा जा सकता है। पास ही मिट्टी का तेल रखने के लिये कनस्तर और पीपे बनाये जाते हैं। स्टीमर घाट पर ह्वेल मछलियां उतारी जाती हैं। बड़े बड़े कारखानों में इनसे चरबी और दूसरी चीजें निकाली जाती हैं। घाट से १ मील की दूरी पर यह कारखाना समुद्र की ओर स्थित है। एक ओर समुद्र और दूसरी ओर खाड़ी होने से डर्बन नगर की सुन्दरता विशेष रूप से बढ़ जाती है। समुद्र में स्नान करने के लिये दूर दूर से लोग आते हैं। पश्चिम की ओर दौड़ के मैदान के पास बोटेनीकल गार्डन है। यह ५६ एकड़ भूमि घेरे ड्रेकन्सबर्ग नेशनल

पार्क ड्रेकन्सबर्ग पार्क का प्राकृतिक दृश्य बड़ा सुन्दर है और योरुप अथवा अमरीका के प्राकृतिक दृश्यों से टक्कर ले सकता है। यह पार्क नैटाल के पश्चिमी कोने पर स्थित है जो आरेंज फ्रीस्टेट और बसूटोलैंड के बीच में घुसा हुआ है। पर्वत की चोटी इन तीनों के बीच में राजनैतिक सीमा बनाती है। पहाड़ का मध्यवर्ती भाग उत्तर में मांट आक्सस्पेर्स से दक्षिण में जायंट्स कासेल तक चला गया है। प्रायः यह सब सरकारी भूमि है। इसी में यह नेशनल पार्क है। इसका दृश्य अल्पस पर्वत के दृश्य से मिलता है। टुगेला घाटी में यात्रियों के ठहरने के लिये होटल बना दिया गया है।

ईस्ट लंडन बफेलो नदी के मुहाने पर २०० फुट ऊँचे पठार पर स्थित है। केप प्रान्त की अधिकतर ऊन इसी बन्दरगाह से भेजी जाती है। इसकी जन-संख्या लगभग ३०,००० है। इसमें आधे योरुपीय हैं। मूल-निवासियों को दबाने के लिये १८४८ ई० में यहाँ एक ब्रिटिश सेना उतरी तभी इस नगर की स्थापना हुई। १८७२ में ब्रेकवाटर (उर्मिविध्वंसक दीवार) का बनना आरम्भ हुआ। इस नगर की प्रधान सड़क आक्सफर्ड

स्ट्रीट है। इसी सड़क पर इस नगर के बैंक होटल आदि प्रधान भवन बने हैं। रेलवे स्टेशन शहर के मध्य भाग में स्थित है।

पोर्ट एलिज़बेथ चौड़ी अल्गोआ खाड़ी पर स्थित है। जन-संख्या के दृष्टि से केपटाउन के पश्चात् दूसरा स्थान पोर्ट एलिज़बेथ का है। इसकी जन-संख्या ६५००० है। इसमें प्रायः आधे गोरे हैं।। १८२० ई० ब्रिटेन से कुछ लोग प्रथम बार यहां आकर बसे धीरे धीरे नगर की वृद्धि हुई। यहां के गवर्नर डन्किन ने अपनी स्त्री की स्मृति में इसका नाम पोर्ट एलिजबेथ रक्खा। इसके पृष्ट प्रदेश में भेड़ों के बढ़ने से ऊन और शुतुर्मुर्ग के पर बाहर भेजने के लिये अधिक मात्रा में मिलने लगे इससे इस बन्दरगाह की वृद्धि स्वतः होती गई। यहां प्रति वर्ष अप्रैल मास में कृषि प्रदर्शिनी होती है। अल्गोआ की खाड़ी खुली हुई है। भारी जहाज़ दूर ठहरते हैं। हलकी नावों से माल उतारा जाता है। समुद्र तट और ३०० फुट ऊंचे पठारी सिरे के बीच में तंग पेटी पर कारबारी नगर स्थित है। भूमि इतनी सपाट है कि कई स्थानों में सीढ़ियाँ बनानी पड़ीं पांच छः मील की लम्बाई में

बसे हुये ज़ीनेदार घर समुद्र से बहुत सुन्दर दिखाई देते हैं। उत्तर की ओर रेलवे स्टेशन है। दाहिनी ओर बाज़ार है। बाईं ओर सिटी हाल है। यहां का पुस्तकालय १८४३ ई० में स्थापित हुआ। इसमें ३०,००० से ऊपर पुस्तकें हैं। सामने महारानी विक्टोरिया की मूर्ति है। बर्डस्ट्रीट में अजायबघर है। यहां अब मोटर बनने लगे हैं।

ब्लोयम' फान्टेन आरेंज फ्रीस्टेट की राजधानी है। यह एक चौड़े ऊँचे मैदान में स्थित है। चारों ओर यह ४००० फुट ऊँची पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इसकी जन-संख्या प्रायः ५०,००० है जिनमें २२,००० गोरे हैं। १८६२ ई० में यह एक गांव था। १८८० में यह एक नगर बना दिया गया। १८६० में लार्ड राबर्ट्स ने इस पर अधिकार कर लिया। दक्षिण अफ्रीका का संघ बन जाने पर ब्लोयम फान्टेन में बड़ा न्यायालय खुला। ब्लोयम्फान्टेन एक उपजाऊ कृषि जिले का केन्द्र है। यहाँ से ऊन, मक्का और मांस बाहर को भेजा जाता है। यहाँ प्रति वर्ष कृषि प्रदर्शिनी होती है। ब्लोयम फाउन्टेन शिक्षा का केन्द्र है। यहाँ एक विश्वविद्यालय

है। यहां की पब्लिक लाइब्रेरी और अजायब घर भी प्रसिद्ध है। सड़कों के दोनों ओर पेड़ लगे हैं। पार्कों की अधिकता होने से शहर का दृश्य बड़ा सुन्दर हो गया है।

विटवाटर्स रैंड—जिन चट्टानों में सोना पाया जाता है वे जहानेसबर्ग के पूर्व और पश्चिम में १३० मील तक चली गई हैं। खान को देखने के लिये सोने की कम्पिनी की आज्ञा लेनी पड़ती है। जहानेसबर्ग में इस प्रकार की कई कम्पिनियाँ हैं। स्वर्ण मिश्रित चट्टानें प्रायः गहराई पर पाई जाती है। कहीं कहीं यह चट्टानें धरातल से १०,००० फुट की गहराई तक चली गई हैं। लेकिन अभी इस गहराई तक खुदाई नहीं हो सकी है। विलेज डीप माइन सबसे अधिक (७,६०० फुट) गहरी है। स्वर्ण मिश्रित कच्ची धातु को बारूद से उड़ाकर तोड़ते हैं। फिर इसे मशीन से कूंट कर धूल (आटा) सा बारीक कर लेते हैं। इस धूल में पानी मिला कर कीचड़ की लुब्दी बना लेते हैं। इस लुब्दी से सोने के कणों को प्रथक करने के लिये कई रासायनिक क्रियायें होती हैं। अलग किये सोने के कणों को नये ढंग की

मशीनों से शुद्ध करते हैं। अन्त में पिघले हुये शुद्ध सोने को सांचों में ढाल कर सोने की सिलें तयार कर लेते हैं। कुछ सिलें दक्षिण-अफ्रीका में सिक्का ढालने के लिये टक्सालों में भेज दी जाती हैं। अधिकतर सिलें जहाज़ों पर लद कर बाहर भेज दी जाती हैं। जहां जहां से सोने के कण शुद्ध कर के अलग किये गये हैं। वहाँ सफेद बालू के ढेर पहाड़ के समान ऊँचे हो गये। अब तक जहानेसबर्ग की खदानों से १,००,००,००,००० पौंड का सोना निकल चुका है।

बसूटोलैंड—यह बहुत ही कटा फटा पठार है। यह विषम आकार का है। इसके उत्तर और पश्चिम में आरेंज फ्रीस्टेट, पूर्व में नैटाल और दक्षिण में केप उपनिवेश है। इसका क्षेत्रफल ११७१६ वर्ग मील है। इसकी पूर्वी सीमा के पास ड्रेकन्सबर्ग पर्वत है। अधिक पश्चिम में भी कुछ उजाड़ पर्वत हैं। इनके बीच बीच में तंग घाटियाँ हैं। इसका पश्चिमी भाग खेती के योग्य है। औसत वर्षा ३० इंच है। बसूटो जाति में कई फिरके शामिल हैं। इन सब को इनके नेता मोशेष ने एक कर दिया। पर मोशेष को कई लड़ाइयां लड़नी पड़ी। कभी बोअर

और कभी अँग्रेज़ों ने उसमे युद्ध छेड़ दिया। अन्त में उसे अँग्रेज़ों की पराधीनता स्वीकार करनी पड़ी। १८६८ ई० से बसूटोलैंड ब्रिटिश (१८७१ में यह) केप उपनिवेश से मिला दिया गया। १८८४ में यह फिर अलग कर दिया गया। उस समय से यह मूल-निवासियों का प्रदेश नियत कर दिया गया। यह ब्रिटिश छत्र छाया में है। पर यहां गोरों का उपनिवेश नहीं है। वहां एक ब्रिटिश रेज़ीडेंट कमिश्नर रहता है। उसको दक्षिण-अफ्रीका के हाई कमिश्नर के आदेशानुसार कार्य करना पड़ता है। शासन प्रबन्ध के लिये यह ७ ज़िलों में बांट दिया गया है। प्रत्येक ज़िले में वार्ड होते हैं। प्रत्येक वार्ड में मोशेष वंश का एक सरदार होता है। सम्मति देने के लिये बसूटोलैंड में एक काउन्सिल है जिसमें १०० सदस्य हैं। इस देश में लगभग साढ़े पांच लाख मनुष्य रहते हैं। १२०० गोरे २०० भारतीय आदि एशिया वासी हैं।

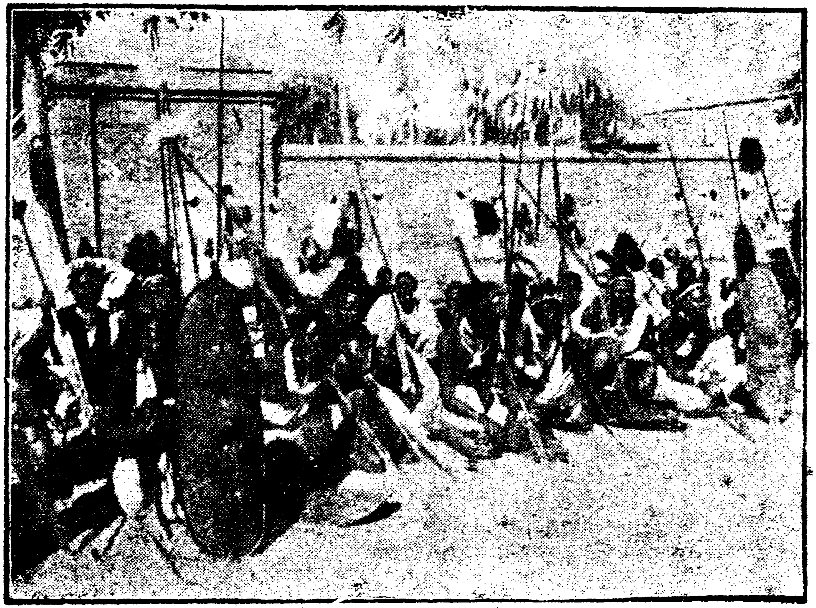
बसूटोलैंड की राजधानी मसेरू नगर है। यहां २००० बांटू और ४०० गोरे रहते हैं। बसूटोलैंड में ५४७ प्राइमरी स्कूल हैं। इनका प्रबन्ध प्रायः मिशनरियों के हाथ में है। यह एक कृषि प्रधान प्रदेश है। पर यहां

गोरे लोग किसान नहीं हैं। व्यापारी मिशनरी और शासक हैं। यहां गेहूं और मक्का बहुत होता है। गाय, बैल, भेड़, बकरी और घोड़े पाले जाते हैं। भेड़ों से अच्छी ऊन मिलती है। इस प्रदेश में केवल एक मील रेलवे लाइन है जो इस देश की राजधानी मसेरू को आरेंज फ्रीस्टेट से मिलाती है। शेष भागों में आने जाने के लिये सड़कें या पगडंडियां हैं। इस देश में केवल दस डाक और तार घर हैं।

स्वाज़ीलैंड

स्वाज़ी लोग बांटू जाति के हैं। इनका ज़ूलू और दूसरी जातियों से सम्बन्ध है। स्वाज़ी लोग कुछ कुछ स्वाधीन हैं। स्वाज़ीलैंड ट्रान्सवाल के दक्षिणी-पूर्वी कोने पर स्थित है। इसके उत्तर-पश्चिम और दक्षिण में ट्रान्सवाल हैं। पूर्व में पुर्चगाली पूर्वी-अफ्रीका है। दक्षिण की ओर कुछ दूर तक ज़ूलूलैंड है। स्वाज़ीलैंड का क्षेत्रफल ६७०४ वर्ग मील है। यह देश तीन प्राकृतिक भागों में बटा हुआ है जिन्हें उच्च (हाई)

मध्यम (मिडिल) और नीचा (लो) वेल्ड कहते हैं। पहाड़ी उच्च वेल्ड की उँचाई ४००० फुट है। मध्य वेल्ड की ऊँचाई २००० फुट है। निम्न वेल्ड की उँचाई समुद्र-तल से केवल १००० फुट है। यहां वर्ष भर में अनुपात से ५२ इंच वर्षा होती है। ऊँचे भाग स्वास्थ्य-कर हैं। निचले भागों में मलेरिया ज्वर फैलता है। स्वाज़ीलैंड की जन-संख्या सवा लाख है। इसमें लगभग २२०० गोरे ५०० एशिया वासी और शेष मूल-निवासी हैं। यहां का शासन रेज़ीडेंट कमिश्नर के हाथ में है। वह अफ्रीका के हाई कमिश्नर के आधीन होता है। इस देश में चार जिले हैं। म्बाबेन राजधानी है। इस देश में एक भी रेल नहीं है। आने जाने के लिये कुछ सड़कें अवश्य हैं। कुछ सड़कों पर मोटर चला करते हैं। यह देश गाय बैल पालने के लिये बड़ा उप-योगी है यहां प्रायः ४ लाख गाय बैल हैं। मक्का, तम्बाकू, गेहूँ, जौ और कपास की खेती होती है। म्बाबेन के पास टिन निकालने का काम होता है। वेल्ड के कुछ भागों में कोयला और सोना भी पाया जाता है।



अफ्रीका के कुछ लड़का लोग।